दैहिक सड़ांध

Daihik Sadandh

***Class dt.* : 20-03-2020**
BK Dr. Sachin Bhai ji
OSB Reception, Pandav Bhavan

ओम शांति। दक्षिण भारत में एक महान योगी कभी हुआ था, जिसका नाम था - वैमन्ना योगी। कोई कहते हैं 15 वीं शताब्दी, कोई कहते हैं 16 वीं, कोई कहते हैं 17 वीं। तिथि पता नहीं, परंतु महान योगी था। कवि था, महाकवि। आंध्रा में जो मंदिर है, श्रीशैलम में मल्लिकार्जुन, कहा जाता है वो निमित्त था। उसके जीवन में बहुत ही हृदयस्पर्शी एक वृत्तान्त है- वो और उसका भाई रमन्ना दोनों ही बचपन में अनाथ हो गये थे। बड़ा भाई जो था उसकी शादी हो गई और ये अभी छोटा था पर जैसे-जैसे बडा हो गया, कुसंग में चला गया और वो कुसंग इतना बढ़ गया, इतना बढ़ गया कि हर प्रकार का विकार, हर प्रकार के नशे की लत उसे लग गई। और वो एक अत्यंत विकर्मी और कुकर्मी व्यक्ति बन गया। और वैमन्ना धीरे-धीरे एक वैश्या के पास जाने लगा और वो वैश्या उससे रोज धन मांगती रहती और जब धन उसे नहीं मिलता तो उसने फिर घर में चोरी चालू कर दी। उसका भाई और उसकी भाभी दोनों ये जानते थे कि ये कुसंग में है। उसे छुड़ाने की कोशिश भी की परंतु भाई-भाभी दोनों का बहुत अधिक प्रेम भी था उससे। तो वैमन्ना ने चोरी करना चालू की, घर से जेवर और जब भाभी को पता चला तो उसने सारे जेवर छिपा लिये और एक रात जब भाभी सोई हुई थी और वैमन्ना के पास अब उस वैश्या को देने के लिये कुछ भी नहीं था और वो वैश्या निरंतर मांगती रहती थी। तो आधी रात को वो भाभी के कमरे में आता है और उसके गले में जो जेवर है वो निकालने की कोशिश करता है। वासना का भूत सवार था और भाभी जाग जाती है और उसको देखती है, ये उसके कमरे में आया हुआ है। उसको तो पहले कमरे से बाहर निकालती है और फिर उससे पूछती है ये तुम क्या कर रहे थे। तो वो कहता है कि मेरा जिससे प्यार है उस वैश्या से, उसने मांगा है। वो भाभी शायद बहुत ज्ञानी, योगी आत्मा रही होगी। केवल एक योगी ही वो बात कह सकता है जो उस भाभी ने कहा। क्या कहा होगा? *हम योगी शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। हिंदी में एक दूसरा शब्द है योगिनी। पर योगिनी शब्द का प्रयोग कम होता है, योगी ही मेल और फीमेल दोनों के लिये प्रयोग किया जाता है। योगी पुरूष भी हो सकता है, स्त्री भी हो सकती है। स्त्री के लिये दूसरा शब्द है योगिनी पर प्रयोग कम आता है*

उसका। क्या कहा होगा उसकी भाभी ने? किसी को पता है, वैमन्ना महाऋषि की योगी की कहानी? वैमन्ना योगी। कोई कहता है 1820 में जन्म लिया था। वो एक ऐसी बात कह देती है कि वो जब जाके वो करता है, उसे परम वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। ऐसा वैराग्य, ऐसा वैराग्य कि वो व्यक्ति जो विकारों में डूबा था, वो व्यक्ति जो देह के बिना रह नहीं सकता था, वो व्यक्ति जिसमें हर प्रकार के नशे की लत थी, वो व्यक्ति ऐसे वैराग्य को उत्पन्न होता है कि वो सब कुछ संसार छोड़ कर चला जाता है, तपस्वी बन जाता है, प्रभु प्रेम में डूब जाता है, ऐसी घटना। वो कहती है, कि तुम कहते हो कि उस वैश्या का तुमसे प्रेम है और तुम्हारा उस वैश्या से, और वो तुमसे ये मांग रही है। उससे जाके कहो कि वो निर्वस्त्र अवस्था में खड़ी रहे और ये जो जेवर है वो पैरों के नीचे से हाथ डालकर तुमसे पीछे से ले। तो वो जाकर वैसा ही करता है। तो जैसे ही वो पीछे से हार देने लगती है वो नेकलेस, उसके देह को वो देखता है और उसे तुरंत वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। ये वास्तविकता है इस शरीर की। और फिर एक पल वहां नहीं टिकता। ये उसकी भाभी ने उसे कहा था कि ऐसा करो और फिर वहां से हमेशा के लिये चला जाता है।

देह की वास्तविकता जैसे ही पता चलती है, वो जो देह के प्रति भ्रम है, वो जो देह के सौंदर्य का भ्रम है, जैसे ही टूटता है, और व्यक्ति देख लेता है ये शरीर है क्या? वैराग्य आ जाता है। कवि लिख रहा है

चोला माटी के राम , एकर का भरोसा

ये जो चोला है ये माटी का भरा हुआ है, भरोसा एक राम का है।

चोला माटी के राम, एकर का भरोसा,
द्रोण जैसे गुरू चले गये,
करण जैसे दानी, संगी करण जैसे दानी।
बाली जैसे वीर चले गये, रावण जस अभिमानी,
चोला माटी के राम, एकर का भरोसा।

एक राम का ही भरोसा है, इस देह का कोई भरोसा नहीं है, यह देह मिट्टी है, मिट्टी में मिल जाना है। अंग्रेजी कवि एच. डबल्यू. लॉन्गफ़ेलो (Henry Longfellow) अपनी कविता में लिखता है- *"डस्ट थाउ आर्ट, टू डस्ट रिटर्नेस्ट"* **(Dust thou art, to dust returnest).** मिट्टी तुम हो मिट्टी में मिल जाओगे, ये शरीर के लिये लिखा गया है, आत्मा के लिये नहीं। *डस्ट थाउ आर्ट, टू डस्ट रिटर्नेस्ट।* तुम मिट्टी हो, मिट्टी में मिल जाओगे।

चोला माटी के राम, एकर का भरोसा चोला माटी के राम।
कोनो रीस नह कोनो राह न
भैया ही सब के पारिक
इक दिन आयी सब पे पारी
काल को नोला छोडे नाहीं
राजा रंक भिखारी

भगवान उस पारिख उस इवैल्यूयेटर की तरह आयेगा कि जो सबका हिसाब लेगा एक दिन राजा, रंक, भिखारी कोई भी नहीं छूटेगा।

भव से पार लगे कर हेते
हरी के नाम सुमरले
संगी हरे के नाम सुमरले
ए दुनिया माया के रे पगला
जीवन मुक्ति कर ले
चोला माटी के राम, एकर का भरोसा
चोला माटी के रे
चोला माटी के हो
हाय चोला माटी के राम
एकर का भरोसा
चोला माटी के राम, एकर का भरोसा
हाय चोला माटी के राम

जो गायिका ने ये गीत गाया अवधी भाषा है, अवधी से मिलती हुई, जब वास्तव में उसके बेटे ने शरीर छोड़ा था तब ही उसने ये गीत गाया था कि ये मिट्टी है, *चोला माटी के राम एकर का भरोसा*। तो जब तक आत्मा देह में फंसी है, तब तक आत्म अभिमानी स्थिति सोल कांसियस स्टेज बन ही नहीं सकती। **18 तारीख की मुरली थी विपरीत बुद्धि अर्थात्? नाम रूप में फंसते है।** और नाम रूप क्या है? बांस । बांस है बांस । नाम रूप की बांस में फंसना आज इस पर हम चर्चा करेंगे। नाम रूप को बाबा ने क्या कहा? बांस कहा। नाम में तो कम फंसते हैं। नाम में फंसना और रूप में फंसने में क्या अंतर है? बाबा ने कहा ये बास है, ये विपरीत बुद्धि की निशानी है, आज कहा गटर में गिरते है। बाप धर्मराज भी है, फिर पश्चाताप करते फिर

रोते हैं, फिर दिल खाती है उनकी। माया विकर्म कराती है, भ्रष्ट कर्म करते हैं। ये कलियुग है, ये छी-छी दुनिया, ये विकारी दुनिया, ये पतित दुनिया, ये रावण का राज्य है, कितने सारे नाम गिनाये। ये तमोप्रधान दुनिया, ये कलियुगी दुनिया है। आज की मुरली में दिल खाती रहती है। माया गटर में गिरा देती है। नाम रूप में फंसते हैं। नाम कम, रूप ज्यादा। नाम अर्थात् नाम में फंसना अर्थात किसी का नाम बहुत ज्यादा है। किसी की बहुत ख्याति है, नामचीन है कोई उसमें लट्टू हो जाना। क्योंकि बड़े लोगों के पीछे पड़ने में फायदे बहुत है, बहुत सारे काम हो जाते है, इसलिए नाम के पीछे पड़ते हैं। या फिर नाम हो जाये, ये कामना। नाम में फंसने के दो अर्थ है। एक तो हमारा नाम हो जाये, ख्याति हो जाये, प्रसिद्द हो जाये। योगी की सबसे बड़ी इच्छा कौन सी होती है ? गुमनाम रहने की। गुमशुदा रहने की। पहले योगी सोचता है प्रसिद्द हो जाउं, पर बाद में पता चलता है कि वो गुमनाम ही रहने में अच्छा है। विदेश का संत था वोल्टेयर। संत कहो या महान व्यक्ति उसकी इच्छा थी कि मैं बहुत प्रसिद्द हो जाउं, मैं बहुत प्रसिद्द हो जाउं और वो हो गया। जब वो प्रसिद्द हो गया और सड़कों से चलता था, लोगों ने चलना मुश्किल कर दिया उसका। विदेश में प्रथा है अगर कोई महान व्यक्ति का कपड़े का टुकड़ा भी मिल जाये तो पुण्य है। तो वो जाता था उसकी कमीज फाड़ देते थे लोग। इसलिए फिर उसने सोचा ये कहा फंस गया इससे तो गुमनाम ही अच्छा था, गुमशुदा ही अच्छा था। अननोन। इस संसार में योगी पुरूषार्थ करता है कौनसा ? अननोन रहने का। कोई जाने न। क्योंकि जानने की वो जो स्टेज है, वो भी देख ली और उसमें क्या मिला? दुःख। क्योंकि आज तुम्हारी महिमा कर रहे, कल कोई दूसरा आयेगा तो उसके पीछे भाग जायेंगे। क्योंकि ये जो लोग है मॉब, भीड़। मॉब मेंटालिटी। आज इसके पीछे, तुम्हीं भगवान हो। कल इसको रिजेक्ट कर देंगे, नया आ जायेगा कहेंगे तुम भगवान हो, तुम हमारे प्रेरणा स्रोत हो और जो पुराने है वो! वो नहीं चाहिए अब। बहुत सुन लिया, इसको अब छोड़ो। अंग्रेजी में कहते है - *'द न्यू कीड ऑन द ब्लॉक'* **(**the new kid on the block). नया कौन है? हां ये नया है, इसके पीछे भागो। तो नाम में फंसना अर्थात् उसके पीछे जाना जिसका बहुत नाम है। या फिर नाम में फंसना अर्थात खुद को ख्यातनाम करने का प्रयत्न करना। और दोनों ही माया के रूप है क्योंकि दोनों में ही चाह है और जहां चाह है वहां दुःख है। जहां चाह है वहां कलियुग है, जहां चाह समाप्त है वहां सतयुग है। ये नाम की बीमारी है। उससे भी कड़ी बीमारी दूसरी है जिसकी आज हम चर्चा करेंगे और वो है रूप की बीमारी अर्थात रूप की बीमारी को क्या कहेंगे? रूप की बीमारी अर्थात क्या ? रूप में आकर्षण, शरीर में आकर्षण। शरीर को सुंदर मानना ये भ्रांति और शरीर के पीछे पागल होना, शरीर को देखना, शरीर के फोटो खींचते रहना, शरीर को देखते रहना। काला गोरा ये

जो माया है सोचो कोई बहुत अच्छा वक्ता है और वो बहुत सुंदर है तो उसके पीछे। इसीलिये नहीं कि वो सुंदर है परंतु व्यक्तित्व बहुत सुंदर है और वाणी बहुत सुंदर है परंतु वही वाणी यदि किसी कुरूप व्यक्ति से निकले और उसका भी व्यक्तित्व सुंदर है, तो क्या लोग यहां भी आकर्षित होंगे? नहीं। जो योगी होंगे, जो आध्यात्मिक होंगे रियल, केवल वही होंगे। यहां जो मॉब है, वो तो देह को देख रही है। 50 प्रतिशत आकर्षण तो देह का है, 50 प्रतिशत वाणी का, 50 प्रतिशत पवित्रता का, 50 प्रतिशत चरित्र का। अगर वही वाणी, वही चरित्र किसी कुरूप व्यक्ति में है तो शायद नही होंगे। **क्योंकि रूप की बीमारी इतनी गहरी बैठी हुई है, घुसी हुई है कि हर व्यक्ति उसी में डूबा हुआ है। सबसे पहला पुरूषार्थ तो है कि स्वयं को ही स्वयं की देह से उपराम कर देना। हमारा सबसे ज्यादा मोह अपनी ही देह में है। अपने देह को तपाना है।** अगर हमारा अपनी देह में कोई मोह नहीं, तो किसी और का हमारी देह में मोह नहीं होगा। अगर हमारा अपनी देह में कोई आकर्षण नहीं तो किसी और का हमारी देह में भी आकर्षण नहीं होगा। यदि किसी और का हमारी देह में आकर्षण हो रहा है तो जरूर वो हमारी अपनी ही देह के आकर्षण का परिणाम, प्रतिध्वनि है। इको (**echo**) हो रहा है वहां पर, सूक्ष्म इको। बाबा ने इसको कहा बांस । और बांस के बहुत सारे प्रकार है दुर्गंध के।

7 प्रकार की दुर्गंध हम देखेंगे और 5 विधियां जिससे इस दुर्गंध से छूटा जाये। दुर्गंध के प्रकार बहुत सारे है। 15 टाइप्स ऑफ ओडर (**odour/odor**). पर हम उसमें से कुछ दुर्गंध देखेंगे और ये जो शरीर है और ये जो... कोई कहेंगे सुबह सुबह ये कैसी बाते कर दी। अच्छी अच्छी बाते बोलो जरा फूल वाली, प्रेम वाली, भावना वाली। ये सुबह-सुबह वैराग्य की बाते। पर सुबह ही वैराग्य की बाते करनी चाहिए क्योंकि सुबह जो चिंतन किया जाता है, वो गहरे घुस जाता है। क्योंकि वासना छिपी हुई है, दबी हुई है। क्यों 10 साल, 20 साल, 30 साल और 40 साल ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद, आज की मुरली में है - खुद पवित्र बनते है, दूसरों को बनाते है, दूसरे जो गिरे हुये है उनको उठाते है और फिर खुद गिरते है, क्यों? क्या उन्हें पवित्रता का महत्व पता नहीं ? क्या उन्होंने प्रतिज्ञा नहीं की थी ? क्यों ? क्या था ऐसा ? क्या वो मधुबन में नहीं रहे थे? मधुबन में भी रहे थे। क्या बाबा से नहीं मिले थे ? बाबा से भी मिले थे। क्या दादियों को नहीं देखा था? दादियों के निष्कलंक चरित्रों को उन्होंने देखा था। बाबा से अनुभव नहीं किया था? बाबा के हाथ से टोली ली थी। बाबा से स्टेज पर दृष्टि ली थी। पर ऐसी कौन सी माया आ गई कि आत्मा शरीर में फंस गई और घसीटतें हुये वो माया यहां से बाहर ले गई। भगवान के राज्य से। तो इसको साधारण तो नहीं समझा

जायेगा न? ये तो नहीं कहा जायेगा ना कि हम तो बहुत पवित्र है, हमें तो माया आती ही नहीं। ऐसे कैसे नहीं आती? जन्म-जन्म के विकारी संस्कार है। पहले तो ये स्वीकार कर लो कि हमें भी माया आती है। पहले तो ये स्वीकार कर लो कि हमें भी अभी तक वो सम्पूर्ण पवित्रता की कोई झलक ही प्राप्त नहीं हुई है। वासना दबी रहती है किसी अंधेरे कोने में मन के, अगर उस तक पहुंचना है तो कड़े शब्दों का प्रयोग चाहिए। **अगर उस तक पहुंचना है तो टॉर्च लेकर घुसना पड़ेगा अंदर**, **वैराग्य की टॉर्च।** और जो कहा आत्मा का सबसे ज्यादा मोह, लगाव, आसक्ति, लागत आत्मा की शरीर से है। तो सारा पुरूषार्थ वैराग्य का है, सारा पुरूषार्थ इस शरीर से डिटैच होने का है, सारा पुरूषार्थ इस शरीर के प्रति जो इतना मोह है, जो पागलपन है, दिवाने है, उस दिवानगी से मुक्त होने का है। नहीं तो कुछ न कुछ, हल्के-फुल्के भाव प्रकट होते ही रहेंगे। इससे दोस्ती कर लूं, यह दिखने में हैंण्डसम है, यह दिखने में सुंदर है, इसकी मदद करूं, उसकी मदद करूं, उसको भाई बनाउं, उसको बहन बनाउं। अब ब्राह्मण डायरेक्ट थोड़ी न बॉयफ्रेण्ड और गर्लफ्रेण्ड बनायेंगे, कुछ तो चाहिए दूसरा आधार। तो सेवा के लेबल तो चिपकाने पड़ेंगे ऊपर से, कुछ ज्ञानयुक्त बातें तो करनी पड़ेंगी, कुछ शेयरिंग तो होनी चाहिए, ज्ञान वाली। जो ऊपर-ऊपर से होगी, जो कि ढोंग और दिखावा होगी, जबकि अंदर से वासना धधक रही है। उसी से दोस्ती क्यों करनी है? दूसरे भी तो है। अब हिसाब किताब, ये भी एक दूसरा बहाना है। क्योंकि ब्राह्मण कुछ भी करेंगे, तो अच्छे ज्ञानयुक्त शब्दों का जब प्रयोग किया जाता है तो सुरक्षा हो जाती है। हमारा उसके साथ हिसाब-किताब, पता नहीं क्या हिसाब-किताब है। अपने विकारों को सेवा के शब्द से, हिसाब किताब से, ड्रामा के शब्द से, दोस्ती के शब्द से, पवित्र प्रेम के शब्द से छिपाना नहीं है। ये सारे शब्द है- प्यूरिटी, पवित्र प्रेम। सेवा का संबंध, सेवा के साथी, तोड़ निभाना है। कितने शब्द हमने निर्माण किये है, भगवान को भी सुना दे। अगर वो हमको कुछ कहे तो और वो भी चुप हो जाये। क्योंकि इन शब्दों के सामने वो भी क्या बोलेगा? इतने पॉवरफुल शब्द हमारे पास है। क्योंकि सिखाया उसी ने हैं, उसी से सीखे हैं हम। मेरी बिल्ली मुझसे म्याउं।

1. पहला : गेंगरीन (Gangrene) - नाम रूप में फंसना अर्थात दुर्गंध और दुर्गंध का एक प्रकार है- गेंगरीन । पैर जब सड़ जाता है- डायबेटिक पेशेंट में, मधुमेह के रोगी में, पैर जब सड़ जाता है, गेंगरीन कहा जाता है। कैसी दुर्गंध आती है वहां से? जिसने नहीं सूंघी है वो कभी सूंघ कर देखना। डायबेटिक पेशेंटस आते हैं हॉस्पिटल्स में, पैरों में चोट लगी हुई। तीन-तीन महीना हो गया, दो-दो महीना हो गया ड्रेसिंग चालू है और जैसे ही ड्रेसिंग खोलो, नासापुटों में अंदर घुस जाती है यहां दिमाग तक, इतनी दुर्गंध।

क्या उस दुर्गंध वाली ड्रेसिंग को कोई मुंह लगाकर बैठेगा? ये नाम रूप भी वैसा ही है। पर इस देह को तो पकड़े हुये हैं, चाटते रहते इस देह को। है क्या इसमें? कुछ भी नहीं, गेंगरीन। क्या ऐसा वैराग्य हमारे मन में इस देह के प्रति है? क्या है? क्यों मन इतना पागल है इसके पीछे? क्यों युवक बैठे रहते इंटरनेट पर? क्यों रात रात भर जागते रहते? क्यों फिल्मों में जाते रहते? क्यों इतना आकर्षण है फिल्मों का? क्या सीखने जाते फिल्मों से? अगर कोई फिल्म देखने जाते तो क्या लक्ष्य से जाते? सीखने के लिये, आज मोरल क्या है? कितना उस हीरो ने त्याग किया, मुझे भी त्याग करना चाहिए। क्या ऐसा कोई सीख के आता है? लक्ष्य तो है ही विकार, दुर्गंध है। जो दुर्गंध गैंगरिंग में है, बाबा ने कहा ये नामरूप की बांस है। विपरीत बुद्धि अर्थात् नाम रूप में अटकते हैं। उसकी बास आती है बाप को। बाबा कहेंगे- हटाओ इसको यहां से अगर बाबा के सामने हमें पेश किया जाये और हमारा कोई एक ऐसा संबंध है जिसमें नाम-रूप की बीमारी में हम फंसे हुये है। वो नाम-रूप की बीमारी कोई और रूप भी हो सकती है। मां का बच्चे में अथाह मोह है वो भी बांस है, पति का पत्नि में, पत्नि का पति में अत्यंत मोह, वो भी बास है। जहां मोह है वो दुर्गंध है। हमें तो अपने आपको सभी मोह से मुक्त करना है। लास्ट चेप्टर ही क्या है? नष्टोमोहा। मोहजीत राजा की कहानी। तुम देह के मालिक हो। दिन-रात देह के पीछे लगे हुये है। देह को खिलाने में लगे हुये है। आज की मुरली में है- खुशी ही खुराक है, अर्थात हैप्पीनेस इज फुड। इससे अपने शरीर का पोषण करो, उस भोजन से नहीं। खुशी खुराक है, पैदल चले जाओ, थकोगे नहीं। क्यों? क्योंकि खुशी खुराक है। क्या हमने खुशी को अपना भोजन बनाया है? नहीं। हमारा भोजन कुछ और है, खुशी नहीं है। खुशी नहीं है, इसलिये तो उसमें जा रहे हैं। उसमें खुशी मिल रही है क्योंकि वो तो अधीनता है। वास्तविक खुशी, योगी का भोजन खुशी है, योगी का भोजन संकल्प है, योगी का भोजन ऊर्जा है- ब्रह्मचर्य की। जो उसके अंदर ऊर्जा है, उस ऊर्जा से ही उसके शरीर का पोषण होता है। उसे किसी और भोजन की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में देखा जाये तो खुशी खुराक है, इस बात का हमनें कितना चिंतन किया है? बाबा ने कभी कहा है, कि दूसरी कोई खुराक है? हमेशा क्या कहा है? खुशी ही खुराक है। पर हमनें माना है क्या? नहीं। पहले मानो। आज खुशी खाओ शाम 6 बजे तक। चलो नाश्ते में आज खुशी खाना। देखो आज क्या होता है? वास्तव में खुशी भोजन हैं ना? तो आज नाश्ते में खुशी खाना। थाली लो एक, और सोचो उसमें खुशी रखी है, और खाओ। फिर देखना, आहा! पेट भरा कि नहीं भरा? जिसका भरा मतलब वो योगी और जिसका नहीं भरा वो अयोगी। ऐसा क्या कर लिया रात भर पेट ने जो सुबह-सुबह इतना नाश्ते की आवश्यकता है? पाश्चात्य लेखकों ने इसके ऊपर बहुत लिखा है- कि **पेट रात भर सोया था, आराम था, और उसको उठते ही**

थाली भरकर नाश्ता दिया जा रहा है। 3.30 बजे ब्रेड, क्या कहें इसको? जगदीश भाई जी से किसी ने पूछा था, भाईसाहब ये क्या है यहां पर? इतनी सारी चीजें है। क्या-क्या खायें हम? ये तो योगियों का भोजन नहीं। भाईसाहब ने कहा- तुमको किसने खाने के लिये बोला? तुम वो खाओ जो तुमको खाना है। बाकि छोड़ो, वो तुम्हारे लिये थोड़े ही है। **वो मेहमानों के लिये हैं, तुम तपस्वी हो।**

2. दूसरा : रोटन फुड (rotten food) (सड़ा हुआ भोजन) - एक भोजन को डिब्बे में रख दो आज, तीन दिन डिब्बा बंद रखो और खोलो, फिर क्या होता है? किसने करके देखा ऐसा? करके या हुआ है ऐसा जीवन में। जो कुमार है उनके साथ तो होता ही है। याद ही नहीं रहता किस डिब्बे में भोजन है। और उसमें रह गया और तीन दिन के बाद खोला उसमें फंगस। जूस रख दो एक 5-6 दिन बोटल बंद और फिर खोलो कैसा फब्बारा निकलता है। उसमें जो दुर्गंध है वहीं देह में दुर्गंध है। देह को देखने की इच्छा है। क्या है इस देह में? कुछ भी नहीं है।

3. तीसरा : एक्सपलशन ऑफ गैसेस (expulsion of gases) मीथेन गैस - लंबी गैसेस की लिस्ट है। वो गैस यदि हवा में आ जाये तो दुर्गंध, पागल हो जाते हैं। जो सबसे खराब से खराब गैसेस है संसार में। एक्सपलसन ऑफ मीथेन, ये सारी गैसेज, इसमें जो दुर्गंध है वही दुर्गंध इस शरीर में है।

4. चौथा : डेड ऐनीमल (dead animal) / मरा हुआ जानवर - रखके देखो। कुत्ते से बहुत प्यार हैं ना? कई लोग कुत्ता पालते। मरने के बाद उसे 15 दिन घर में ही रखना, फिर देखो क्या होता है? क्या हुआ? मरे हुये जानवर सड़क पर गिरे रहते हैं न, क्या होता हैं वहां? कैसी दुर्गंध आती है, कोई जाता है उसके पास? पर शरीर के लिये तो क्या-क्या करते हैं। अपने शरीर के लिये नहीं, दूसरे के शरीर की प्राप्ति के लिये। ये मुझे मिल जाये, ये मेरा है, ये मेरी है, इसका शरीर मुझे चाहिए। इसके पहले भी कहा था- एक बार एक युगल यहां आये थे, या यहीं थे, फिर चले गये कहीं। उनकी अभी-अभी शादी हुई 15 दिन हुये। उसकी युगल जो थी पत्नी, अचानक से मर गई, और वो पति इतना रो रहा है, इतना रो रहा है, 9 बजे से 12 बजे तक बैठकर रो रहा है। जोर- जोर से रो रहा है, मेरी पत्नी, मैं कैसे जिउंगा? कैसे जिउंगा? कैसे जिउंगा? इतना अथाह प्रेम, प्रेम की गंगा बह रही थी जैसे। और 2 मास के बाद आ गया कॉर्ड लेकर डॉक्टर साहब शादी में जरूर आना। प्यार किससे था? क्या उस आत्मा से था? अगर आत्मा से होता वास्तविक लैला-मजनू वाला तो उसकी याद में सारा उम्र कुंवारा रहता पर शरीर से प्यार था। अब शरीर है ही नहीं, शरीर दूसरा चाहिए। डेड एनीमल।

5. पांचवा : मुर्दा लाश मनुष्य की (dead body) - मुरलियों में कई बार आता है। लाश को क्या करते? जला देते। रखते हैं क्या घर पर? और लाश को क्या कहते? डेड बॉडी। बॉडी को इधर से हटाओ, उसका नाम नहीं लेते। **क्या कहते हैं? बॉडी, बॉडी को अब उधर, इसकी बॉडी को अब उधर ले लो।** कि नाम लेते? भाई कहते क्या उसके आगे पीछे, या बहन? कभी नहीं। इसलिये रात को सोते समय क्या सोचना? ये लोग खड़े इधर जलाने के लिये। मैं इधर मृत्यु शैया में हूं। मृत्यु शैया में जल जायेगा सब। और ये भी सोच लो, लोग क्या सोच रहे हैं? क्या कह रहे हैं? मन ही मन क्या विचार चल रहे उनके? एक सोच रहा कितना लेट हो रहा, कितनी धूप हो रही, कब जायेंगे? भूख लग रही है। मन में क्या-क्या चल रहा है- हरेक के। कोई कारोबार का सोच रहा है। ऐसा सोचना वाला बहुत ही कम होगा कोई कितनी पुण्य आत्मा थी। कुछ-कुछ ही सोच रहे हैं।

6. छठवां : बॉडी ओडर (odour/odor) - शरीर से निकलने वाली दुर्गंध। कोई 10 दिन नहाये नहीं। हमारे पास आते पेशेन्टस। 1-1 महीने से जिन्होंने नहाया नहीं, उठाके लेकर आते उन्हों को, उनकी यहीं धुलाई होती फिर, ट्रीटमेंट के दौरान। कई सारे साधू आ जाते हैं- एक-एक महीने से जिन्होंने नहाया नहीं है। एक साधु आये थे- ऐसे ही बैठे थे दो महीने से, तपस्या में। उसका पैर सीधा करने में दो-तीन महीना फिजियोथैरेपी लगा, ऐसे हो गया था। आबू रोड में जाते समय मंदिर हैं ना, वहां। तो शरीर से दुर्गंध आती है- पसीना।

7. सातवां : विष्ठा / एक्सक्रीटा (excreta) - पशुओं का और मनुष्य का। उसमें जो स्टूल में, जो दुर्गंध है बस वहीं दुर्गंध नाम रूप की है।

सबेरे-सबेरे ही मूड ऑफ होना चाहिए, सबेरे-सबेरे ही वैराग्य का चिंतन होना चाहिए। क्योंकि दिन भर में तो जो वैराग्य का चिंतन चलता हैं वह सबकांशियस में थोड़े ही जाता है। सबकांशियस में जाने का समय है सुबह। सुबह-सुबह मन को बताओ- *आरंभ है प्रचंड, बोल मस्तकों के झुण्ड, आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो।* सबेरे-सबेरे धधकते हुये शब्द चाहिए, वैराग्य के ताकि मन विरक्त हो जाये और मन के लिये बस ये शरीर का संसार है उससे हटके केवल आत्मा का संसार रह जाये और जब आत्मा का संसार रहेगा, आत्मा केवल आत्मा के ही विषय में सोचेगी। और दूसरा कोई सोचेगी ही नहीं। आत्मा की ही सारी बातें याद आती रहेंगी और कुछ याद नहीं आयेगा।

तो ये 7 दुर्गंध है और बहुत सारे हो सकते हैं- जिसको अधिक चिंतन करना है दुर्गंध का, वो और करे। स्टेगनेटेड वॉटर (stagnated water), एक जगह पानी जो संचित हो जाता है, दुर्गंध आता है उसमें। कम्पोस्ड, दुर्गंध आता है उसमें। सीवर वाटर, दुर्गंध आता है। बहुत सारे है दुर्गंध। बाहर जाकर खड़े रहो-देखो और फिर ये सोचो ये शरीर में भी वहीं दुर्गंध है।

अब दुर्गंध को मिटाने की 5 विधियां-

1. पहला : बेनिश (banish) - फेंक दो उसको जिस चीज से दुर्गंध आ रही है। जो भोजन जिससे दुर्गंध आ रही है, उसको डिस्पोज कर दो। फेंक दो उसको। वो जो संबंध है जिसमें दुर्गंध आ गई है- उस संबंध को उखाड़ कर फेंक दो। उस संबंध को विछिन्न कर दो, कट कर दो, वैराग्य की तलवार से, वैराग्य की कैंची से। धागे जो बांधे हैं ना। उसको काटो अब अमृतवेला बैठकर। बेनिश, थ्रो।

2. दूसरा बर्न (burn) - अभी शरीर को कब तक रखोगे? मुर्दे को घर में रखा जाता है क्या? जला दिया जाता है। देखना अमृतवेला, विज्युअलाइज करना कि ये जो संबंध है, कोई भी संबंध हो सकता- बेटे का, मां का, बहन का, भाई का, पति-पत्नी का, बी.के., नॉन बी.के से। कोई लेना-देना नहीं है। जिसमें मोह की दुर्गंध है, मोह की सड़ांध है, उसको क्या कर देना है? जला देना है। कैसे जलायेंगे? सबसे ऊंचा टॉप का स्थान कौन सा हैं सृष्टि में? परमधाम में पहुंच जाना। वो यहां हैं, मैं यहां हूं, उसकी सारी किरणें मुझ में आ रही है और जो भी चीज को हम देखते हैं, जैसे उस बिंदु को जैसे देखते रहो इसको कहते हैं-इमिटेशन थ्योरी। **जो भी चीज को कंटीन्युअस देखा जाये। उसके जैसे गुण हममें आने लगते हैं।** सूर्य को कंटीन्युअस देखेंगे- वो ज्ञान सूर्य हैं शिव बाबा, प्वाइंट ऑफ लाइट। जैसे दिया है, कैंण्डल है उसको देखते रहो, त्राटक। **उसके सारे गुण हममें आने लगेंगे।** हमें फिर लगने लगेगा मैं ही सूर्य हूं। उसका प्रकाश मुझमें है, और उस प्रकाश से इसको बर्न कर देना है।

3. तीसरा : बेरी (bury) अर्थात गाड़ देना- जमीन में गाड़ देना। क्या कर देना? जमीन में गाड़ देना। ऐसे दुर्गंध वाले संबंध को। या तो जला दो या तो दफना दो उसको, दफन कर दो। दफन करने के बाद मिट्टी अच्छे से डाल देना। कोई निशान नहीं छोड़ना वहां पर, नहीं तो? निशान रखोगे तो फिर याद आयेगा, फिर आओगे, फिर खोदोगे। **अभी उसका नंबर है, उससे रूठना, रूसना हो गया, नंबर**

डिलीट। और जब दोस्ती होगी, नंबर फिर ढूंढेंगे। फिर यहां-वहां से निकालेंगे। फिर नई दोस्ती, फिर नया मोह, फिर नये संबंध और फिर नये विकार। डिलीट परमानेंटली।

4. चौथा : बॉब (bob) अर्थात् कट कर दो उसको - कट कर देना, नो कांटेक्टस। इसको कहते है- *जीरो डिजीटल कम्यूनिकेशन।* सॉरी नहीं, थैंक्यू नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ नहीं मतलब कुछ भी नहीं। बस खत्म। अनजाने हो जाओ। कुछ भी करने गये तो उसमें फिर आ जायेगा **- मिसिंग यू, लव यू, थिंकिंग ऑफ यू, फिर तुम्हारा फोन नहीं आया?, फिर क्या हुआ?** फिर आज बाबा ने मुरली में क्या कहा? क्योंकि चालू तो यहां से ही करेंगे न। सेवा कैसी चालू हैं? तो चालू तो वहीं से करनी है। उधर सेंटर पर क्या चालू है? सब ठीक तो हैं ना, प्रोग्राम होने वाला था। दादीजी आये कि नहीं? **ये सारी ऊपर की बात, ये सब ऊपर-ऊपर है, अंदर कुछ और। वायरस का क्या चल रहा है? उधर क्या कोई केसिस है क्या? संसार की बातें, मतलब संभल-संभल कर, फूंक- फूंक कर कदम, ऊपर ऊपर का। और फिर गहरी बातों में धीरे-धीरे, भूमिका।** काट देना है, काट देना अर्थात् नो कांटेक्टस, *जीरो डिजीटल कम्यूनिकेशन।*

5. पांचवा : बाम (balm) - ये लास्ट वाला, एक पॉजिटिव चिंतन है और सबसे महत्वपूर्ण चिंतन है अब तक का। इंग्लिश में एक शब्द है बॉम। इसके दो अर्थ है एक तो वो जो आप सब जानते है और दूसरा अर्थ है- **सुगंध**। सुगंध लानी है जहां दुर्गंध है, कौन सी? प्यूरिटी की। याद की सुगंध, वैराग्य की सुगंध। वैराग्य में कितनी सुगंध है। वैराग्य शब्द एक बार बोल के देखो एकदम पानी आ जाता है मुंह से। बोल के देखो? वैराग्य! आहा, वैराग्य! रस है, वैराग्य शब्द बोलते ही मन गदगद हो जाता है। वैराग्य एकदम, संसार एक तरफ। राग एक में, केवल उसमें। एक को ही याद करो बस, और कुछ नहीं। तो सुगंध लानी है प्यूरिटी की, तो सुगंध लानी है वैराग्य की, तो सुगंध लानी है त्याग की, तो सुगंध लानी है याद की, तो सुगंध लानी है ज्ञान की, तो सुगंध लानी है धारणाओं की, तो सुगंध लानी है मर्यादाओं की, तो सुगंध लानी है मौन की। आज का स्लोगन है- जैसे आवाज में आना सहज है, आवाज से निकल जाना भी सहज हो जाये। तो सुगंध लानी है शांति की। तुम शांति दूत हो, शांति के पैगम्बर हो, तुम मैसेन्जर हो। कल कहा था- मैसेन्जर पैगम्बर तुम हो, वो धर्म स्थापक नहीं है, तुम धर्म की स्थापना करते हो। तुम ज्वालामुखी हो। तो प्यूरिटी को बढ़ाना है, वैराग्य को बढ़ाना है, ज्ञान को बढ़ाना है, तपस्या को बढ़ाना है, त्याग को बढ़ाना है, धारणाओं को बढ़ाना है, मर्यादाओं को बढ़ाना है, एकांत को बढ़ाना है, मौन को बढ़ाना है, अंतमुर्खता को बढ़ाना है। तब

कहीं जाके ये जो दुर्गंध है इससे...। उधर से दुर्गंध आ रही तो उधर जायेंगे ही नहीं। वैराग्य आ जायेगा दुर्गंध से। तो नाम रूप में फंसने की दुर्गंध से क्या होना है? मुक्त होना है।

कवि लिखता है- *चोला माटी के राम ,एकर का भरोसा चोला माटी के राम, द्रोणा जैसे गुरू चले गये, करण जैसा दानी, संगी करण जैसा दानी। बाली जैसे वीर चले गये, रावण जस अभिमानी।* हम भी चले जायेंगे एक दिन ये शरीर को तो जाना ही है। **अब किसका-किसका शरीर पकड़ कर रखोगे, जिसके शरीर को पकड़े हुये हैं, उसका शरीर ही जायेगा।** इसीलिये बेहद के वैरागी भव। बी अर्थात् बेहद का वैराग्य भी हो सकता है। तो जो-जो, जहां-जहां सारे विश्व भर में नाम रूप की बास में अभी भी फंसे है। आज की तारीख में, आज 20 तारीख है, वैसे बाबा आज आने वाले थे। अति अति अति प्यार है तो पहले ही आ गये। इमरजेंसी लैंडिग कर दिया बाबा ने ।

ओम शान्ति